परोपकारिता एवं सह अवधारणा

डॉ. संजय कुमार दुबे

परोपकार का समाजशास्त्रीय सिद्धांत शब्द 'परोपकारिता' समाजशास्त्री अगस्त कॉम्टे द्वारा गढ़ा गया था। उन्होंने कहा "VIVE POUR AUTURI" जिसका अर्थ है कि दूसरों के लिए समान। जॉन स्टुअर्ट मिल और हर्बार्ट स्पर्नेर जैसे दार्शनिकों और लेखकों ने इस अवधारणा को उत्सुकता से अपनाया और इसे बहुत ही शानदार ढंग से इस्तेमाल किया। समाजशास्त्री एनिल दुरकेहिम ने अपने विश्व प्रसिद्ध मोनोग्राफ "Le Suicide (1987) में अपनी धारणा में आत्महत्या की तुलना में अहंकारी और परोपकारी विचारों की तुलना पर उन्होंने 1902–1903 में परोपकारिता और अहंकार की सामान्य अवधारणाओं पर कुछ प्रकाश डाला। इसके बाद, कैप्टन एल के तहत व्याख्यान प्रकाशित किए गए थे। 1925 में शिक्षा नैतिकता और इसका अंग्रेजी संस्करण 1961 में सामने आया। अहंकार और परोपकारिता का उनका विश्लेषण संस्थागत परोपकार की अवधारणा की आधारशिला प्रदान करता है।